शोध प्रतिवेदन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"

निर्देशिका
डॉ. शिप्रा गुप्ता
(रीडर)

प्रस्तुतकर्त्री
विजय लक्ष्मी शर्मा
(एम.एड. छात्रा)

बियानी गर्ल्स बी.एड़ कॉलेज, जयपुर(राजस्थान)

(सत्र 2015-17)

1 प्रस्तावना

मनुष्य का महत्वांकाक्षी होना एक स्वभाविक गुण है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में कुछ ना कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है। सभी व्यक्तियों की इच्छाएँ अलग–अलग होती है। परन्तु इनमें से बहुत कम लोग अपनी इच्छाओं को मूर्त रूप दे पाते हैं। उदाहरणार्थ – जैसे कोई व्यक्ति चिकित्सक बनना चाहता है लेकिन विद्यालय का चयन, उसमें प्रवेश खर्च तथा पढ़ाई सम्बन्धी खर्च जैसी बाधाओं को वह दूर नहीं कर लेगा तब तक वह अपनी आकांक्षाओं के अनुरूप चिकित्सक नहीं बन सकेगा। अतः व्यक्ति की आकांक्षाओं की पूर्ति में सामाजिक वातावरण की भी अहम भूमिका होती है। सामाजिक प्राणी होने के कारण व्यक्ति समाज में रहकर ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयासरत रहता है। लेकिन मानव स्वभाव के कारण व्यक्ति की आकांक्षा पूर्ति के लिए वस्तुएँ प्राप्ति की इच्छा बढ़ती जाती है, उसकी इच्छाएँ 'दिन दौगुनी रात चौगुनी' बढ़ती चली जाती है। ये इच्छाएँ ही आकांक्षाऐं कहलाती है व इन आकांक्षाओं की पूर्ति का मार्ग है शिक्षा। शिक्षा ही वह ज्योति पुंज है जो मानव मस्तिष्क के अंधकार को दूर करके ज्ञान रूपी प्रकाश को आलोकित

करती है। शिक्षा मानव को मुक्ति का मार्ग दिखलाती है। शिक्षा के द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है और हमारे जीवन को सुसंस्कृत करती है अर्थात् जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है तथा सूर्यास्त होने पर कुम्हला जाता है ठीक उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति कमल के फूल की भाँति खिल उठता है। शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली सतत् प्रक्रिया है जो बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास कर उसे पूर्णता प्रदान करती है। जिस प्रकार शिक्षा एक ओर बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान तथा वीर बनाती है उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी शक्तिशाली एवं आवश्यक साधन है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं तथा परम्पराओं आदि सांस्कृतिक विरासत को हस्तान्तरित करता है। शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षा के कार्य में भाग लेने वाले तीन घटक है। शिक्षक, पाठ्यक्रम और शिक्षार्थी इस अर्थ में एक व्यक्ति सीखने तथा एक व्यक्ति सीखाने वाला होता है। अंग्रेजी भाषा में शिक्षा के लिए 'एजूकेशन' शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसकी उत्पत्ति लेटिन भाषा के तीन शब्दों 'एजूकेटम', 'एजूकेयर' तथा 'एजूसीयर' से मानी जाती है। 'एजूकेटम' शब्द ई + ड्यूको से मिलकर बना है जिसमें ई का अर्थ है – अन्दर से तथा ड्यूको का अर्थ है – बाहर से निकालना अर्थात् व्यक्ति की आन्तरिक शक्तियों को बाहर लाना। 'एजूकेयर' शब्द का अर्थ है – प्रेरणा, पथ–प्रदर्शन अर्थात् शिक्षा व्यक्ति के जन्मजात गुणों को विकसित करती है। शिक्षा को ज्ञान का पर्याय माना जाता है तो कहीं सूचना प्रदान करना, तो कहीं जीवन जीने की कला के रूप में व्याख्या की गई है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है कि शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर मन आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है। शिक्षा व्यक्ति के समाज के स्वरूप व अस्तित्व को निर्धारित करती है। जन्म से ही बालक माता–पिता के व परिवार के संरक्षण में होता है पर जब वह बाल्यावस्था में प्रवेश करते हुए शिक्षा के द्वारा आगे पथ पर बढ़ता है तो वह हर क्षेत्र से परिचित होता है। शिक्षा बालक को अतिरिक्त ना देकर उसमें जो कुछ भी प्रकृति प्रदत्त क्षमतायें, योग्यताएँ तथा

अभिवृत्तियाँ हैं, केवल उनको विकसित या आलोकित कर उनका परिमार्जन करती है। जैसे–जैसे बालक के विकास का क्रम बाल्यावस्था से परिपक्वास्था तक चलता है जिसमें वह अपने आपको आवश्यकतानुसार धीरे–धीरे भौतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक वातावरण के साथ सामंजस्य नहीं कर पाता है और ना ही बालक को समाज के रीति–रिवाजों तथा परम्पराओं का और ना ही कोई पद–प्रतिष्ठा, लक्ष्य, आकांक्षाओं के प्राप्ति का मार्ग पता है। उसे इसका ज्ञान केवल शिक्षक ही शिक्षा द्वारा प्रदान करता है। जैसे–जैसे बालक शिक्षा ग्रहण करता है वैसे–वैसे उसका कक्षा स्तर व समझ का स्तर भी बढ़ता जाता है। बालक प्राथमिक व माध्यमिक कक्षा को उत्तीर्ण कर उच्च माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश करते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर को सम्पूर्ण शैक्षिक पीढ़ी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण समझा जाता है। इन विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी, बाल्यावस्था को पार करते हुए किशोरावस्था में प्रवेश करते हैं। किशोरावस्था का मानव जीवन की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान है। इसके बाल्यावस्था तथा प्रौढ़ावस्था को मध्य का काल कहा जाता है। किशोरावस्था को अंग्रेजी में 'एडोलसेंस' कहते हैं। यह शब्द एक लेटिन शब्द 'एडोलसेंसीयर' से बना है जिसका अर्थ है –"To grow to maturity" अर्थात परिपक्वता की ओर बढ़ना। इस अवस्था में शारीरिक परिवर्तनों के साथ–साथ मानसिक योग्यता, चिन्तन, तर्क एवं निर्णय शक्ति का अत्यधिक विकास होता है। अतः किशोरावस्था को परिवर्तनों एवं समस्याओं का काल भी कहा जाता है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों में स्वभाविक, मानसिक, पारिवारिक दबाव तथा व्यवसायिक आकांक्षाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः इस काल को बालक–बालिकाओं के बिगड़ने का काल भी कहा जाता है। किशोरावस्था जीवन का नाजुक दौर है। हल के अनुसार किशोरावस्था एक नया जन्म है क्योंकि इसमें उच्चतर और श्रेष्ठतर मानव विशेषताओं के दर्शन होते हैं। किशोरों में इस अवस्था में कल्पना की प्रधानता रहती है। अतः किशोर इस समय भविष्य के बारे में अनेक प्रकार के स्वप्न देखा करते हैं। इस कारण से वह कोई ना कोई व्यवसाय चुनने का प्रयास करता है। इसके लिए वह उपयुक्त विषय का चुनाव करता है। अपनी व्यवसायिक आकांक्षा की पूर्ति के लिए उपयुक्त विषय के चुनाव पर परिवार, विद्यालय व समाज की मनोदशा तथा पारिवारिक आर्थिक स्थिति का भी प्रभाव पड़ता है। निम्न वर्ग के परिवार अधिक धन व समय व्यय होने वाले व्यवसाय

का प्रशिक्षण कराने में असमर्थ होता है। जिन व्यवसायों के प्रशिक्षण में कम धन व समय व्यय होता है उन व्यवसायिक प्रशिक्षण विषयों को प्राथमिकता दी जाती है तथा उच्च वर्ग के परिवार ऐसे व्यवसायिक प्रशिक्षण विषयों का चुनाव अपने बालकों के लिए करते हैं जैसे – इंजीनियरिंग, चिकित्सा तथा प्रशासनिक सेवा। इन विषयों के प्रशिक्षण में काफी धन व समय व्यय होता है जिसे वहन करने में उच्च वर्ग के परिवार समर्थ हैं तथा कुछ अभिभावक अपने बालक की व्यवसायिक आकांक्षा को दबाते हुए उसे अपने व्यवसाय के अनुरूप ही विषय का चयन करवाते हैं तथा ऐसे क्षेत्र या समाज जिनमें अधिकांश सदस्य अशिक्षित, अल्प शिक्षित या अनपढ़ हैं वे अपने बालक–बालिकाओं को अपने इच्छानुसार ही व्यवसायिक विषयों का चयन करने की अनुमति प्रदान करते हैं। जिस समाज में स्त्रियों के व्यवसाय के लिए संकुचित मनोदशा होती हैं उस समाज की बालिकाओं के लिए अपनी आकांक्षा की पूर्ति के अनुरूप व्यवसाय का चुनाव (विषय चुनाव) कठिन हो जाता है। उन बालिकाओं के लिए गृहस्थी से सम्बन्धित शिक्षण का ही चुनाव उपयुक्त माना जाता है।

2 अध्ययन का औचित्य

प्रत्येक अनुसंधान कार्य को करने से पूर्व एक समस्या का चयन आवश्यक होता है वो समस्या किसी व्यक्ति अथवा समूह से संबंधित होती है जब अनुसंधानकर्ता उस समस्या का चयन करता है तो उसके कोई उद्देश्य व लक्ष्य होते है उस समस्या को चुनने का उसका कोई न कोई औचित्य अवश्य होता है जिस किसी समस्या को अनुसंधानकर्ता चुनता है उस समस्या का समाधान योग्य होना भी आवश्यक होता है ऐसी समस्या जिनका कोई समाधान ना हो सकता हो अथवा जिनके समाधान की आवश्यकता ही न हो अथवा जिन समस्याओं को उठाने का कोई औचित्य ही सिद्ध न होता हो, ऐसी समस्या रचना के लिए व्यर्थ होती है किसी भी समस्या का औचित्य उसके परिणामों की विस्तृत क्षेत्र में सार्थकता एवं उपयुक्तता के आधार पर निश्चित किया जाता है।

माध्यमिक स्तर के बाद जब विद्यार्थी उच्च माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेते है तो उनके सामने विषय चयन की समस्या रहती है तो कला, विज्ञान या वाणिज्य में

से किसी विषय का चयन किया जाए। विद्यार्थी अपनी रूचि, बुद्धिलब्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर विषय का चुनाव कर लेता है।

विद्यार्थी सामाजिक वातावरण से जुड़े होने के कारण उनकी व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। पृथक सामाजिक वातावरण (ग्रामीण क्षेत्र) के कारण विद्यार्थी के लिए व्यवसायिक क्षेत्र का चुनाव करना एक कठिन कार्य होता है। व्यक्ति के अपने आर्थिक, सामाजिक वातावरण से संबंधित बालक की आकांक्षा, व्यवहार व प्रवृत्ति भी भिन्न होती है। हमारे इस भौतिक युग में शिक्षा, छात्र एवं अभिभावकों सभी का रूप व कर्त्तव्य बढ़ गया है। शिक्षा में नित्य नये विचारों ने चुनौतियाँ दी है जिससे विद्यार्थी जगत में आकांक्षाओं का पर्यावरण स्वतः भाव से निर्मित हो गया है। अतः शोधार्थी ने शोध समस्या से सम्बन्धित इस समस्या का चयन किया है–

समस्या से उभरने वाले प्रश्न निम्नांकित है–

1. क्या सरकारी विद्यालयों में अध्ययरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यवसायिक आकांक्षा स्तर निम्न होता है?
2. क्या निजी विद्यालयों में अध्ययनरत उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में व्यवसायिक आकांक्षा का स्तर उच्च होता है?
3. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण में अंतर पाया जाता है?
4. क्या उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव पडता है?

3 समस्या कथन

"उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन"

4 अध्ययन के उद्देश्य

1) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के आत्मविश्वास आयाम का अध्ययन किया गया।

2) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का अध्ययन किया गया।

3) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का अध्ययन किया गया।

4) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन किया गया।

5) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण स्तर का अध्ययन किया गया।

5 परिकल्पनाएँ

1) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के आत्मविश्वास आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है।

2) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

3) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

4) उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

5) उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

6 अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

7 जनसख्या :–

प्रस्तुत शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में जयपुर जिले के **उच्च माध्यमिक विद्यालयों** में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया।

8 न्यादर्श

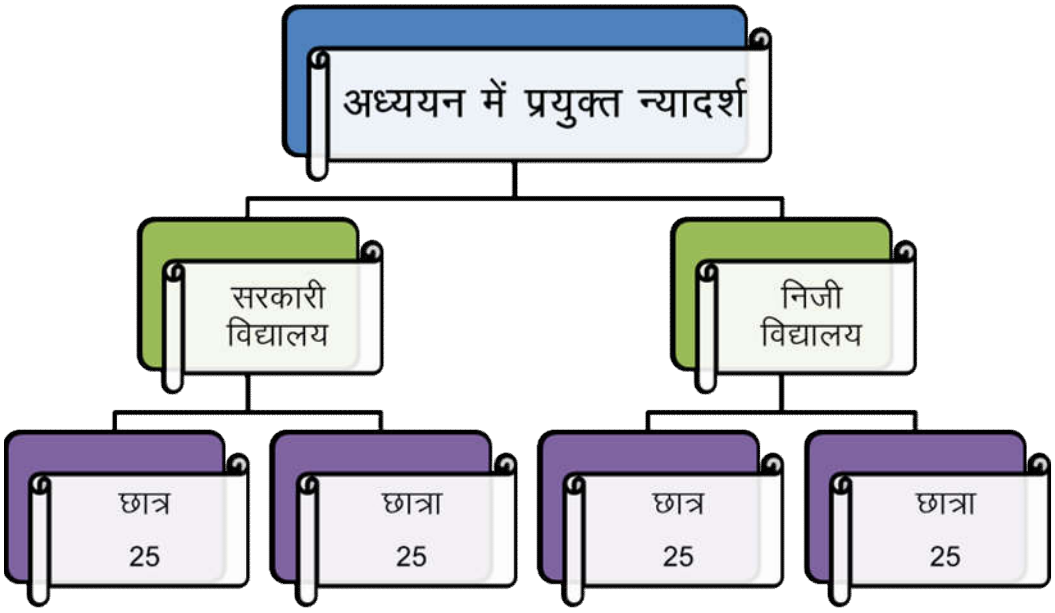

9 उपकरण

1. आकांक्षा स्तर मापनी – (डॉ. सरिता आनन्द)
2. सामाजिक वातावरण मापनी (स्वनिर्मित)

10 शोध परिणाम व व्याख्या

परिकल्पना–1

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के आत्मविश्वास आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के आत्मविश्वास आयाम में सार्थक अन्तर का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर के आत्मविश्वास आयाम में सार्थक अन्तर नहीं है, हो सकता है निजी विद्यालय व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी समाज में उच्च पद प्राप्त करना चाहते हो।

परिकल्पना–2

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है, हो सकता है सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी अपने लक्ष्य के लिए स्वविवेक से निर्णय लेते है तथा उनमें स्वयं में पढ़ने की इच्छा शक्ति होती है।

परिकल्पना–3

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी विद्यालयों की व्यवसायिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है, हो सकता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का जिस तरह के परिवेश में उनका लालन पालन होता है उसी तरह की मानसिकता शुरू से ही उनमें विकसित हो जाती है।

परिकल्पना–4

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के व्यवसायिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है, हो सकता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की तरह ही सकल विद्यालय के विद्यार्थियों में भी सुख–सुविधा तथा उच्च सामाजिक पद–प्रतिष्ठा प्राप्ति की इच्छा हो।

परिकल्पना–5

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण स्तर में सार्थक अन्तर का अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों के सामाजिक वातावरण स्तर में सार्थक अन्तर है, हो सकता है कि निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की तरह सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के माता–पिता की उच्च पद–प्रतिष्ठा, श्रेष्ठ विद्यालय व सुख सुविधायें नहीं होती हो।

11 भावी अध्ययन हेतु सुझाव :–

1. भावी शोधकर्त्ता किसी क्षेत्र विशेष के सामान्य वर्ग व अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की आकांक्षा व सामाजिक वातावरण का अध्ययन किया जा सकता है।
2. उच्च व निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को आकांक्षा व उनके सामाजिक वातावरण का तुलानात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. यह अध्ययन महाविद्यालय स्तर पर भी किया जा सकता है।

4. यह अध्ययन निजी, सरकारी, गैर–सरकारी, अनुदानित गैर–अनुदानित विद्यालयों के विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
5. भावी शोधकर्ता यदि इससे बड़ा न्यादर्श लेकर विद्यार्थिरूों में आकांक्षा व सामाजिक वातावरण का अध्ययन करे तो निष्कर्ष और अधिक विश्वसनीय प्राप्त हो सकते है।
6. प्रस्तुत अध्ययन को उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों व प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों पर भी किया जा सकता है

12 अभिभावकों हेतु सुझाव :–

1. अभिभावकों को बच्चों पर नियमित ध्यान देना चाहिए।
2. अभिभावकों को अपने बच्चों पर अपनी इच्छाएँ थोपनी नहीं चाहिए।
3. अभिभावकों को अपने बच्चों के लक्ष्य निर्धारण में सहयोग करना चाहिए।
4. बच्चों के शैक्षिक उन्नयन का दायित्व केवल विद्यालयों शिक्षकों आदि पर ही नहीं अपितु अभिभावक भी इस जिम्मेदारी का प्रमुख अंग है। अतः अभिभावक अपने बच्चों से ज्यादा अपेक्षा ना रखे।
5. अभिभावकों को घर की समस्याओं की चर्चा अनावश्यक रूप से बच्चों के सामने नहीं करनी चाहिए।
6. अभिभावकों को प्रेम व सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
7. अभिभावकों को अपने बच्चे पर सूक्ष्म दृष्टि रखनी चाहिए तथा उनके मानसिक तनाव व शैक्षिक उपलब्धि का ध्यान रखना चाहिए तथा उसे वांछित महत्व प्रदान करना चाहिए।
8. अस्वीकृति उपेक्षा व अत्याधिक संरक्षण, इन तीनों ही दशाओं से बचकर अभिभावकों को अपने बच्चों को उचित संरक्षण देना चाहिए।

13 विद्यार्थियों के लिए सुझाव :–

1. विद्यार्थियों की आकांक्षाओं का उनकी उपलब्धि पर प्रत्यक्ष परोक्ष प्रभाव पडता है, इसलिए उनहें अपनी आकांक्षाओं का सकारात्मक रूप से विकास करना चाहिए।

2. विद्यार्थिरूों को अपने लक्ष्य व उद्देश्यों को आकांक्षाओ के अनुरूप पहले ही निर्धारित करना चाहिए।
3. विद्यार्थियों को लक्ष्य निर्धारण से पूर्व मनौवेज्ञानिक परीक्षणों का उपयोग कर उनकी क्षमता का मूल्यांकन करना चाहिए।
4. यदि कोई प्रयत्न वाछित फल न दे तो विद्यार्थियों को निराशा नहीं होना चाहिए।
5. विद्यार्थियों को अपने निर्धारित किये गए लक्ष्य का उद्देश्यों की प्राप्ति पर पूर्ण विश्वास करना चाहिए।
6. विद्यार्थियों को कल्पना जगत को छोडकर वास्तविकता की दुनिया में उतरकर अपने लक्ष्य का चुनाव करना चाहिए।
7. विद्यार्थी अपनी इच्छा अनुसार व्यवसाय या विषय का चुनाव करे। किसी भी तरह के बाह्य दबाव में आकर लक्ष्य से ना भटके।

14 अध्यापकों के लिए सुझाव : –

1. विद्यार्थियों के लिए उसकी आकांक्षाओं की प्राप्ति में विद्यालय का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थी के लक्ष्यों की प्राप्ति में अध्यापक का महत्वपूर्ण योगदान होता है तथा विद्यार्थियों की आकांक्षाओं को सुधारने व व्यवस्थित करने मे शिक्षक सहयोग दे सकते है।
2. यह शिक्षक का दायित्व होना चाहिए कि वे प्रत्येक विद्यार्थियों के आकांक्षाओं का ध्यान रखे तथा उनकी प्राप्ति में विद्यार्थियों की सहायता करें।
3. शिक्षकों के द्वारा विद्यार्थियों को मार्गदर्शन व परामर्श देना चाहिए।
4. शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए।
5. विद्यार्थियों मे अच्छी आकांक्षाओ के विकास के लिए अनेक कार्यक्रम व दिशा निर्देश निश्चित किये जाने चाहिए।
6. समय समय पर बालकों के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
7. शिक्षक समय समय पर विद्यार्थियों को लक्ष्य उद्देश्यों से अवगत करवाये ताकि वे अपने मार्ग से ना भटके।

8. शिक्षक विद्यार्थी की व्यक्तिगत समस्याओं पर भी ध्यान देवें।

15 शैक्षिक अभिप्रेत :–

"माध्यमिक स्तर के विद्याथियों के व्यवसायिक आकांक्षाओं पर सामाजिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया गया।"

अर्थात 12 से 18 वर्ष के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी कि आकांक्षाओं पर उसके सामाजिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी एक सामाजिक प्राणी है। अतः विद्यार्थीयों का सामाजिक वातावरण ना केवल विद्यालय से संबंधित होता है। अपितु उसके परिवार का वातावरण, उसके समुदाय तथा उसके आस–पड़ोस के वातावरण से भी संबंधित होता है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, स्वभाव, मनोदशा, आकांक्षाओं पर समाज का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अतः ना केवल शिक्षक वरन् अभिभावक विद्यार्थी को उसकी आंकाक्षा को विकसित करने में सहायक होते है।

अतः शिक्षक व अभिभावक को चाहिए कि वे विद्यालय वातावरण व पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थी पर अपनी आंकाक्षाओं का दबाब ना डाले। विद्यार्थी को उसकी स्वयं की इच्छानुसार विषय और उससे संबंधित व्यवसाय का चुनाव करने दे।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षो के आधार पर हम कह सकते है। कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी किशोरवस्था में होते है। तथा यह अवस्था बच्चों के बनने व बिगड़ने की अवस्था कहीं जाती है। जिसमें विद्यार्थी को उसकी आकांक्षा को पहचानकर उसका मार्गदर्शन न किया जाये तो वे अपने लक्ष्य से भटक जाते है।

अतः शिक्षक को चाहिए कि विद्यार्थियों के सामने न केवल मँहगी उच्च शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा से संबंधित जानकारी न दे अपितु सुलभ, सरल शिक्षा तथा उचित व्यवसाय के बारें में जानकारी दे ताकि विद्यार्थी अपनी आकांक्षाओं का विकास उचित दिशा में कर सके।

अभिभावक को चाहिए कि वक अपने बच्चों को उनकी इच्छानुसार व्यवसाय का चुनाव करने दे जिससे वह अपने लक्ष्य व आकांक्षाओं को सकारात्मक रूप दे सके। ताकि उनका व्यक्तित्व बाधित ना हो तथा कुण्ठा से उनको बचाया जा सके।